॥ ॐ श्री सदगुरु परमात्मने नमः ॥

सदगुरुदेव

साथी-सगे सब स्वार्थ के हैं, स्वार्थ का संसार है ।
निःस्वार्थ सदगुरुदेव हैं, सच्चा वही हितकार है ॥
ईश्वरकृपा होवे तभी, सदगुरुकृपा जब होये है ।
सदगुरु कृपा बिनु ईश भी, नहीं मैल मन का धोय है ॥

निर्जीव सारे शास्त्र सच्चा मार्ग ही दिखलाय है ।
दृढ़ ग्रन्थि की जड़ खोलने कि युक्ति नहीं बतलाय है ॥
निस्संग होने के सबब से ईश भी रुक जाय है ।
गुरु गाँठ खोलन रीति तो, गुरुदेव ही बतलाय हैं ॥

गुरुदेव अदभुत रूप हैं, परधाम माहीं विराजते ।
उपदेश देने सत्य का, इस लोक में आ जावते ॥
दुर्गम्य का अनुभव करा, भय से परे ले जावते ।
परधाम में पहुँचाय कर, स्वराज्यपद दिलवावते ॥

छुड़वाय कर सब कामना, कर देय हैं निष्कामना ।
सब कामनाओं का बता घर, पूर्ण करते कामना ॥
मिथ्या विषयसुख से हटा, सुखसिंधु देते हैं बता ।
सुखसिंधु जल से पूर्ण अपना, आप देते हैं जता ॥

तन इन्द्रियाँ मन बुद्धि सब, संबंध छुड़वा देय हैं ।
अणु ग्रहण करत सूर्य ज्युँ, जग माहीं चमका देय है ॥
आधार सारे विश्व का, सबका ही जो अध्यक्ष है ।
सो ही बनाते जीव को, ब्रह्माण्ड जिसका साक्ष है ॥

इक तुच्छ वस्तु छीनकर, आपत्तियाँ सब मेट कर ।
प्याला पिला कर अमृत का, मर को बनाते हैं अमर ॥
सब भाँति से कृत कृत्य कर, परतंत्र को निज तंत्र कर ।
अधिपति रहित देते बना, भय से छुड़ा करते निड़र ॥

कंचन बनाते देह को, रज मैल सब हर लेय हैं |
ले कांच कच्चा हाथ से, कौश्टब मणि दे देय हैं ||
इस लोक से परलोक से, सब कर्म से सब धर्म से |
परतत्त्व में पहुँचाय कर, ऊँचा करे हैं सर्व से ||

सदगुरु जिसे मिल जाये सो ही, धन्य है जग मन्य है ||
सुर सिद्ध उसको पूजते, ता सम न कोऊ अन्य है ||
अधिकारी हो गुरुदेव से, उपदेश जो नर पाय है |
भोला! तरे संसार से, नहीं गर्भ में फ़िर आय है ||

ईश्धर कृपा से, गुरु कृपा से, मर्म मैंने पा लिया |
ज्ञानाग्नि में अज्ञान कूड़ा, भस्म सब है कर दिया ||
अब हो गया है स्वस्थ सम्यक, लेष नहीं भ्रांत है |
शंका हुइ निर्मूल सब, अब चित्त मेरा शांत है ||

-- भोले बाबा